अध्याय 15

मसीही जीवन

मेरे पिता जो कई वर्षों तक मिश्नरी सेवकाई में रह चुके हैं। उन्हें कई बार परीक्षाओं का सामना करना पड़ा। मसीही विश्वास के कारण उन्हें बंदूक की नोक पर पकड़ा गया, धमकी दी गई एवं जेल में डाला गया। किन्तु वे डगमगाए नहीं। तथापि उनको इसका सबसे बड़ा अनुभव कुछ ही वर्ष पहले हुआ।

एक व्यक्ति जो विश्वासी होने का दावा करता था किन्तु वास्तव में परमेश्वर के विरोध में एक विद्रोही था इसने मेरे पिता की निन्दा एवं अपमान करने का फैसला किया। उस व्यक्ति ने भयानक झूठ बोले। किन्तु इसका बदला लेने के बजाए मेरे पिता ने प्रार्थना की एवं इस बात को परमेश्वर के हाथ में डाल दिया। कुछ महीनों के अन्दर इस व्यक्ति में दूसरों के प्रति ऐसा ही पाप करने का दोष पाया।

मेरे पिता की यह कहानी संसार भर के हजारों विश्वासियों के जीवन में दुहरायी जाती है। वे मजबूत मसीहियों के रूप में पैदा तो नहीं होते किन्तु वे परमेश्वर को अपने जीवनों में कार्य करने देते हैं। इस तरह कई वर्षों में मसीही-चरित्र का विकास होता है। ऊंचे वृक्षों की तरह वे अपनी जड़ों को गहराई तक जाने देते हैं। जिससे तेज हवा चलने पर भी वे नहीं उखड़ते।

क्या आप एक अच्छा व्यक्ति बनना चाहते हैं जो परमेश्वर पर भरोसा करता है एवं सभी परिस्थितियों में स्थिर रहता है। जो हमने पहले ही अध्ययन कर लिया है उसे प्रयोग में लाएं एवं वृक्ष के समान "ऊंचाई में बढें।"

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे...

प्राप्त करना एवं सहभागिता करना
मसीही विकास
विचार एवं कार्य
कलीसियाई जीवन

यह पाठ आपकी सहायता करेगा कि आप...

- उन मूलभूत सिद्धांतों का पता लगा सकें जो एक विजयी मसीही जीवन का मार्गदर्शन करते हैं।
- प्रतिदिन के जीवन में इनका प्रयोग करने हेतु वचनबद्ध हो सकें।

प्राप्त करना एवं सहभागिता करना (बांटना)

उद्देश्य १. मसीही जीवन विकास के कम से कम दो आवश्यक उपायों को जानना।

हम पहले ही अध्ययन कर चुके हैं कि हमें अनन्त जीवन कौन देता है एवं इसे कैसे ग्रहण करते हैं; किन्तु यह अच्छा है कि बहुधा हम अपने को इस बात का स्मरण दिलाते रहें जिस से हम कभी भी नहीं भूल पाएंगे कि हमारे जीवन का आधार यीशु है।

> परन्तु जो कोई उस जल में से पीयेगा जो मैं उसे दूंगा वह फिर अनन्त काल तक पियासा न होगा वरन जो जल मैं उसे दूंगा वह उसमें एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा (यूहन्ना ४:१४)।

परमेश्वर के परिवार का एक भाग बनना सचमुच अद्भुत बात है। यह हमें प्रेरित करती है कि दूसरों को भी यह बात बताएं जिससे वे भी इस परिवार का भाग बन सकें। मत्ती १०:३२ में यीशु ने कहा, "जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा।" क्या यह एक सुन्दर प्रतिज्ञा नहीं?

> पर मसीह को प्रभु जान कर अपने अपने मन में पवित्र समझो और जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे तो उसे उत्तर देने के लिए सर्वदा तैयार रहो; पर नम्रता और भय के साथ। और विवेक भी शुद्ध रखो इसलिए कि जिन बातों के विषय में तुम्हारी बदनामी होती है उनके विषय में वे जो तुम्हारे मसीही अच्छे चाल चलन का अपमान करते हैं लज्जित हों (१ पतरस ३:१५-१६)।

हम मसीह के विषय में इसलिए सहभागिता (बताते) करते हैं क्योंकि हम ऐसा चाहते हैं एवं बाइबल हमें उसके विषय में दूसरों को बताने के लिए

उत्साहित करती है। जब हम मसीह के लिए इस बात का फैसला करते हैं तो हम मजबूत होते जाते हैं।

दूसरा तरीका जिसके द्वारा हम सार्वजनिक रूप से यह घोषणा कर सकते हैं कि हम मसीह के हैं, वह है पानी का बपतिस्मा लेने के द्वारा। पानी का बपतिस्मा आपके मसीही जीवन के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। यीशु ने स्वयं बपतिस्मा लिया था — इसलिए नहीं कि उसको इसकी जरूरत थी किन्तु इसलिए कि वह हमारे लिए एक सिद्ध नमूना है। इसके विषय में आप मत्ती ३ में पढ़ सकते हैं।

> इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो
> (मत्ती २८:१९)

किसी कलीसिया का सदस्य बनना, या स्थानीय झुंड में शामिल होना यह हमारे उद्धार के लिए जरूरी नहीं है किन्तु इससे हमें मसीही परिवार में एक घनिष्ट सम्पर्क प्राप्त होता है। इससे हम अपने चारों ओर रहने वालों के प्रति एवं उनके लिए जिम्मेदार बन जाते हैं। हम एक दूसरे का अधिक ख्याल रखना सीखते हैं। जैसा एक सांसारिक परिवार परमेश्वर की योजना का एक भाग है, वैसा ही आत्मिक परिवार भी — एक ऐसा झुण्ड है जहां हम अपनी सहभागिता (सम्पर्क एवं बातचीत) कर सकते हैं और उनसे सीख सकते हैं। प्रेरितों २:४७ कहता है कि जो उद्धार पाते थे, प्रभु उन्हें विश्वासियों के झुण्ड में मिला देता था।

जो आपको करना है

१. रोमियों १०:९-१० के अनुसार कौन से दो कार्य एक मसीही को करना आवश्यक है?

.....

.....

२. यूहन्ना १:४३-४६ पढ़ें। फिलिप्पुस ने यीशु द्वारा बुलाए जाने के तुरन्त बाद क्या किया?

.....

.....

३. नीचे दिए कौन-कौन से कथन सही हैं?

अ. पानी का बपतिस्मा सार्वजनिक रूप से मसीह को अंगीकार करने का एक तरीका है।

ब. मसीह के विषय में दूसरों के साथ सहभागिता करना (बताना) आवश्यक नहीं है। हम गुप्त रूप से उसके चेले बने रह सकते हैं।

स. मसीही मित्र हमारी सहायता कर सकते हैं और हम उनकी सहायता कर सकते हैं।

मसीही विकास

उद्देश्य २. मसीही विकास में सहायक दो प्रमुख कार्य-कलापों को जानना।

भूख कई प्रकार की होती है। कोई हमसे दूर चला जाए तो हम उनका समाचार प्राप्त करने को तरसते हैं या हममें नए अवसरों की प्राप्ति की भूख हो सकती है। लोग प्रेम और स्नेह के भूखे रह जाते हैं। और निश्चित रूप से हमारे दिल और हमारी आत्माएं उन चीजों तक पहुंच चुकी हैं जो यह संसार नहीं दे सकता।

नया जीवन प्राप्त करने के बाद आपको एक दूसरे प्रकार की भूख का अनुभव होगा — परमेश्वर के वचन की भूख। "नए जन्मे हुए बच्चों की

नाईं आत्मिक दूध की लालसा करो" (१ पतरस २:२)। यीशु ने कहा "मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा (मत्ती ४:४)।

एक मसीही को प्रति दिन बाइबल पढ़ने की जरूरत है। इस्राइलियों के राजा दाऊद ने एक अच्छा नमूना पेश किया। उसने कहा, "धन्य हैं वे जो बुरे व्यक्तियों की युक्ति का तिरस्कार करते हैं..." परन्तु परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने में प्रसन्न रहते हैं एवं रात और दिन उसका अध्ययन करते हैं (भजन संहिता १:१-२)। "अहा, मैं तेरी व्यवस्था में कैसी प्रीति रखता हूं। दिन भर मेरा ध्यान उसी पर लगा रहता है (भजन संहिता ११९:९७)।

परमेश्वर के वचन को पढ़ना मात्र ही नहीं है किन्तु इसे मुखाग्र करना एवं इसकी शिक्षाओं को अपने हृदय में रखना ही महत्वपूर्ण है। जो हमने अध्ययन किया है आवश्यकता के समय पर पवित्र आत्मा हमें उसका स्मरण दिलाता है — जब हमें अपने जीवन में मार्गदर्शन की अत्यन्त आवश्यकता होती है।

> परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा और जो कुछ मैंने तुम से कहा वह सब तुम्हें स्मरण करायेगा (यूहन्ना १४:२६)।

हमारे प्रति दिन के बाइबल अध्ययन के साथ-साथ प्रार्थना भी आवश्यक है। यीशु जिसे इस पृथ्वी में आने से पहले स्वर्ग के सारे विभाग के विषय मालूम था उसे भी प्रार्थना करने की आवश्यकता महसूस हुई। अपने चेलों का चुनाव करने से पहले उसने पूरी रात प्रार्थना में बिताई (लूका ६:१२)। पौलुस और सिलास उस समय प्रार्थना एवं भजन कर रहे थे जब उन्हें बन्दीगृह की जंजीरों से मुक्त किया गया (प्रेरितों का कार्य १६)। मसीह ने अपने चेलों से कहा, "माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा" (लूका ११:९)।

पहला थिस्सलुनीकियों ५:१७ कहता है "निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो" यहां तक कि हम स्कूल में क्यों न हों जहां हमारा दिमाग व्यस्त रहता है या ऐसा कोई कार्य जिसमें हमें पूरा ध्यान देना पड़ता हो, इन परिस्थितियों में हम प्रार्थना की मुद्रा में रह सकते हैं। इस तरह यदि कोई आपातकाल आये तो हमें मालूम है कि परमेश्वर को कैसे पुकारें। अपने कार्य के बीच मिलने वाले लघु अवकाश का लाभ हम प्रभु की स्तुति करने में व्यतीत करते हैं। इस तरह हम निरन्तर उसकी आराधना करते हैं।

जो आपको करना है

४. कौन से दो कार्यकलाप एक विश्वासी को आत्मिक रूप में बढ़ने में सहायक हैं?

.....

.....

विचार एवं कार्य

उद्देश्य ३. यह जानना कि एक विश्वासी के विचारों की सुरक्षा एवं उसे वश में कैसे रखा जा सकता है।

सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है" (नीतिवचन ४:२३)।

प्रभु हमारे विचारों को वश में रखने में सहायता कर सकता है। फिलिप्पियों ४:७ कहता है "तब परमेश्वर की शान्ति जो समझ से बिल्कुल परे है तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।" हमारे विचार जब साफ एवं शुद्ध होते हैं तो वे परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं।

> निष्कर्ष यह है कि मेरे भाइयों अपने हृदय में केवल उन बातों को जगह दो जो अच्छी एवं प्रशंसा के योग्य हैं : जो जो बातें सत्य हैं, जो जो बातें आदरणीय हैं और जो जो बातें उचित, सुहावनी, मनभावनी एवं आदरणीय हैं (फिलिप्पियों ४:८)।

जो बातें परमेश्वर को प्रसन्न करती हैं उनमें अपना मन लगाये रखने के लिए हमें निरन्तर अनुशासन की आवश्यकता पड़ती है। जब तक हम इस संसार में हैं हमें पाप एवं परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है, किन्तु प्रभु की सहायता से हमें इनके सामने झुकने की आवश्यकता नहीं। एक पुरानी कहावत है "पक्षी आपके सिर के ऊपर से गुजर सकते हैं किन्तु आपको, उन्हें अपने बालों में घोंसला बनाने देने की आवश्यकता नहीं। दूसरे शब्दों में "परीक्षाएं आपके चारों ओर हो सकती हैं किन्तु उन्हें आपके विचार एवं कार्य में पाप का रूप धारण करने की आवश्यकता नहीं। अपने विचारों को वश में रखने एवं मन को बुराई से बचाए रखने का सबसे उत्तम तरीका यह है कि हम सावधान रहें कि क्या देखते, सुनते, कहते या करते हैं।

सावधान रहें कि आप क्या देखते हैं "शरीर का दिया आंख है। इसलिए यदि तेरी आंख निर्मल हो तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला होगा" (मत्ती ६:२२)।

जो हम सुनते हैं वह भी हमारे विचारों पर प्रभाव डालता है। मरकुस ४:२४ कहता है "चौकस रहो कि क्या सुनते हो।" क्या आप वार्तालाप पसन्द करते हैं या ऐसा संगीत जो प्रभु से अधिक प्रेम रखने में आपकी मदद करता है? क्या वह आपके विचारों को स्वस्थ रखता है? यदि आपका उत्तर नकारात्मक है तो शायद आपको अपने सुनने में अनुशासन बरतना होगा।

सुनने के अन्तर्गत हमारे स्वयं के शब्द या दूसरों के कहे हुए शब्द आते हैं। जो हम कहते हैं वह एक अच्छा या बुरा जबरदस्त प्रभाव डाल सकता है। यदि कोई हमारे विरुद्ध में कोई कार्य करे हम इसे आसानी से भूल सकते हैं यदि हमने उस व्यक्ति को कठोरता से जवाब न दिया हो। नीतिवचन १५:१ इस तरह कहता है "कोमल उत्तर सुनने से जलजलाहट ठण्डी होती है परन्तु कटुवचन से क्रोध धधक उठता है।" हमारा उद्देश्य नीति वचन २५:११ को पूरा करना हो सकता है "जैसे चांदी की टोकरियों में सुनहले सेब हो वैसे ही ठीक समय में कहा हुआ वचन होता है।"

एक मसीही को सावधान रहना चाहिए कि वह क्या करता है क्योंकि परमेश्वर चाहता है कि वह वही करें जो सही है।

> परमेश्वर ने हमसे कहा है कि भला क्या है। जो वह हमसे चाहता है वह यह है : न्याय से कार्य करें, हमेशा प्रेम से व्यवहार करें और नम्रतापूर्वक परमेश्वर के साथ संगति करें (मीका ४:८)।

हमारा प्रत्युत्तर भजन संहिता के लिखने वाले के शब्दों में यह हो सकता है, "मेरे मुंह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान तेरे सन्मुख ग्रहण योग्य हो हे यहोवा परमेश्वर, मेरी चट्टान और मेरे उद्धार करने वाले। (भजन संहिता १९:१४)।

• • •

जो आपको करना है

५. इस भाग से एक पद का चुनाव करें जो नीचे दिए गए कथनों की पूर्ति की पुष्टि करता हो। दिए गए खाली स्थानों में उपयुक्त संदर्भ (कहां पाया जाता है) लिखें। हमारे विचार

अ. अच्छी बातों की ओर होनी चाहिए .....

ब. परमेश्वर की शान्ति के द्वारा वश में रखे जाते हैं

.....

स. हमारे जीवन को अपने अनुसार ढालते हैं .....

ड. परमेश्वर को ग्रहण योग्य होने चाहिए .....

६. यूहन्ना १७:१५-१९ पढ़ें : तब उन कथनों के अक्षरों में वृत्त खींच दें जो इस वाक्य को सही रूप से पूरा करते हैं।

हमारे विचारों की सुरक्षा

अ. गुफा में छुप कर दिन भर चिन्तन करके की जा सकती है।

ब. उन बातों पर ध्यान लगाकर की जा सकती है जो शुद्ध, भली एवं पवित्र हों।

स. सारे सांसारिक प्रभावों से दूर होकर मसीही संगति में शामिल होकर की जा सकती है।

ड. यीशु की प्रार्थना पर विश्वास करके की जा सकती है कि इस संसार में रहते हुए भी पिता हमारी रक्षा कर सकता है।

कलीसियाई जीवन

उद्देश्य ४. मसीही संगति का अभिप्राय एवं परमेश्वर के कार्य के लिए योगदान को स्पष्ट करना।

जैसा कि हमने सीखा है हमें सुसमाचार के संदेश को प्रत्येक को बताना अवश्य है — इसमें अविनाशी भी शामिल हैं जिन्हें हम मित्र समझते हैं। किन्तु घनिष्ट मित्रों का चुनाव हमें सावधानी से करना चाहिए। अपने खाली समय में हम को केवल उन लोगों के मसीही प्रभावों से प्रभावित रहना चाहिए जो आपको प्रभु में बढ़ने एवं उसकी इच्छा मालूम करने में आपकी सहायता कर सकते हों।

> क्या ही धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता और न ठट्ठा करने वालों की मण्डली में बैठता है, परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है (भजन संहिता १:१-२)।

हम बाइबल का अध्ययन स्वयं और अपने मसीही मित्रों के साथ करना चाहते हैं। हमें परमेश्वर के वचन प्रचार को भी सुनने की आवश्यकता है। "सो विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है" (रोमियों १०:१७)।

और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ो, जैसे कि कितनों की रीति है पर एक दूसरे को समझाते रहो और ज्यों-ज्यों उस दिन को निकट आते देखो त्यों-त्यों और भी अधिक किया करो (इब्रानियों १०:२५)।

जब विश्वासी एक साथ इकट्ठा हों तो उन्हें एक दूसरे की सहायता भी करनी चाहिए। एकता में ही बल है। भजन गान करने का बल एवं प्रभु की स्तुति एक साथ करने का बल।

ताकि देह में फूट न पड़े, परन्तु एक अंग दूसरे की बराबर चिन्ता करें, इसलिए यदि एक अंग दुख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दुख पाते हैं; और यदि एक अंग की बड़ाई होती है तो उसके साथ सब अंग आनन्द मनाते हैं (१ कुरिन्थियों १२:२५-२६)।

परमेश्वर की एक योजना है जिसके द्वारा हम स्थानीय कलीसिया के लोगों की एवं इसके साथ ही दूसरों की आर्थिक सहायता कर सकते हैं। इब्रानियों ७:२-९ हमें इब्राहीम के जीवन का उदाहरण देकर बताता है कि जो कुछ उसके पास था उसने उसका दसवाँ भाग दे दिया। तो भी दशमांश या दसवां भाग देना ही काफी नहीं है।

फरीसियों ने भी जो कि अपने दिनों के धार्मिक अगुए थे अपना दशमांस दिया परन्तु यीशु ने कहा कि हमारे देने का मापदण्ड उन लोगों से कहीं बढ़कर होना चाहिए। उसने कहा कि वह लोग अपनी मौसमी फसलों का अर्थात् पोदीने, सौंफ एवं जीरे का भी दशमांश दिया करते थे किन्तु व्यवस्था की महत्वपूर्ण शिक्षाओं को जैसे न्याय, दया एवं ईमानदारी, इन की ये लोग अवहेलना करते थे (मत्ती २३:२३)। यीशु ने कहा कि हमें उन सभी बातों में विश्वास योग्य बनना है जिसे परमेश्वर हमसे चाहता है।

हम उदारता से अपना धन देना चाहते हैं और इसके साथ ही उन बातों पर भी ध्यान देना चाहते हैं जो प्रभु हमसे चाहता है। हो सकता है कि वह हमारा और अधिक समय या अन्य वरदान चाहता हो — यहां तक कि हमारी भविष्य की योजना भी चाहे कुछ भी क्यों न हो हम उसे एक भेंट प्रेम स्वरूप दे सकते हैं जिसने हमसे पहले प्रेम किया।

जो आपको करना है

७. जो कुछ हमारे पास है उसका दसवां भाग देना क्या कहलाता है? .....

८. इब्रानियों १०:२५ के अनुसार, हम विश्वासियों के साथ इकट्ठे होते हैं ताकि .....

.....

.....

९. रोमियों १२:१-२ मुखाग्र करें। इन पदों के अनुसार परमेश्वर के साथ हमारा सही संबंध .....

.....

.....

आपके टिप्पणी लिखने के लिये

अपने उत्तरों की जांच करें

१. ओठों से अंगीकार करना।
दिल में विश्वास करना।

६. ब) उन्हीं बातों पर ध्यान लगाया कर जो शुद्ध, सही एवं पवित्र हैं।

ड.) यीशु की प्रार्थना पर विश्वास करके कि संसार में सहते हुए भी पिता हमें सुरक्षित रखेगा।

२. उसने नतनएल से मिलकर उसे मसीह के विषय में बताया।

७. दशमांश या दसवां भाग।

३. अ) सही

ब) सही

८. एक दूसरे को उत्साहित करना।

४. प्रतिदिन धर्मशास्त्र बाइबल का अध्ययन करना एवं प्रार्थना करना

९. उसकी सेवा एवं उसे प्रसन्न रखने के लिए स्वयं को समर्पित कर देना।

५. अ) फिलिप्पियों ४:८

ब) फिलिप्पियों ४:७

स) नीतिवचन ४:२३

ड) भजन संहिता १९:१४